188 P
688
M

Dm 5 48/30
... RECEIVED.
10 DEC. 1938
DEPARTMENT

वंदे मातरम्

राष्ट्रीय-सिंहनाद

दमन करो जितना जी चाहे पीछे पग न हटावेंगे।
अब तो अड़कर बैठ गये भारत स्वाधीन बनावेंगे॥
अटल हमारा धैर्य देखकर गिरिवर भी टल जावेगा।
हिंसा-हीन हृदय को लखकर सागर सीस झुकावेगा॥

चुने हुए आदर्श तथा अहिंसात्मक राष्ट्रीय भजन
और महात्माजी की ११ शर्तें तथा कजली

संग्रहकर्त्ता - प्रकाशक
पं० विश्वनाथ शर्मा,
वैदिक औषधालय,
राजादरवाजा, काशी।

प्रथमबार ४०००]
[मूल्य -)

891.431
Sh 23 R

रजिस्टर्ड तानसेन गोलियाँ—

खुशबूदार खुशज़ायका लज़ीज़ मुफ़ीद है। प्यास, खाँसी, उबकाई, हैज़ा में निहायत फायदेमन्द है। पान के ज़ायके को बढ़ाती है। आवाज़ सुरीली तथा गला साफ़ रखती है। केवल सतों द्वारा बनाई जाती है। बड़े डाक्टरों, केमिकल एक्ज़ामिनरों से प्रशंसा-पत्र प्राप्त है। मूल्य ४० गोली -), ८० ≈) २०० ।), ५०० ।।), १००० १)

हेड आफिस—तानसेन हाउस,
जलालपुर जट्टाँ (पंजाब)

ब्रांच—वैदिक औषधालय,
राजादरवाजा, काशी।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 688
Date 17.12.71
GOVT. OF INDIA

मुद्रक—श्रीप्रवासीलाल वर्मा मालवीय, सरस्वती-प्रेस, काशी।

राष्ट्रीय-सिंह नाद

(१)

इलाही तुम भी खयाल रखना
गवाह तुमको बना रहे हैं।
हम हिन्द वालों को पाके दुर्बल
वो हर तरह से सता रहे हैं॥
सुना है फरियाद पर वो मेरे
ग़ज़ब की तेवर चढ़ा रहे हैं।
तो सर कटाने की आरज़ू में
हम आज मक़तल में जा रहे हैं॥
अजब है उत्साह सबके दिल में
कि लोग जेलों में जा रहे हैं।
जो कल थे मखमल पै सोने वाले
वो आज कम्बल बिछा रहे हैं॥
हम हिन्द माता का ऋण चुकाने
को खून अपना बहा रहे हैं।

मगर उन्हें क्या जवाब होगा
जो हम पर गोली चला रहे हैं ॥
हम हिन्द माँ के हैं ऐसे बच्चे
जो जान अपनी लड़ा रहे हैं।
औ एक भारत सुपूत वो हैं
जो पेश डंडों से आ रहे हैं ॥
जो मेरे महफिल के बा मुकाबिल
वो गन मशीने लगा रहे हैं।
तो हम भी आहों की ताक़तों से
उन्हीं की हस्ती मिटा रहे हैं ॥
जो मिल के तैंतीस करोड़ भारत में
आहो गिरियाँ मचा रहे हैं।
ये रोज़े महशर के सोते फितनों
को आज ही से जगा रहे हैं ॥
शमा की सूरत में दिल जला कर
वो लेके ग़ुलगीर आ रहे हैं।
जो हिन्द के हैं चिरागे रौशन
बेचारे सर को कटा रहे हैं ॥
वो जोश खाकर दमन का अपने
जो चक्र अज़हद चला रहे हैं।

तो अहले शायक़ स्वतंत्रता के
खुद अपने सर को झुका रहे हैं॥

(२)

तुम्हें शंख मोहन बजाना पड़ेगा,
ये भारत को फिर से जगाना पड़ेगा.
पड़े वीर आलस में सोते हुये जो,
उन्हें अब तो आकर जगाना पड़ेगा,
हुआ जा रहा है जो भारत यों गारत,
इसे आकर तुमको बचाना पड़ेगा,
छिड़ा युद्ध भारी अहिंसात्मक जो,
तुम्हें सारथी बन जिताना पड़ेगा,
हुये गिरफ्तार गांधी बाबा हमारे,
अब घर-घर में गान्धी बनाना पड़ेगा,
छुड़ा के ग़ुलामी से भारत को फौरन,
तुम्हें इनसे बदला चुकाना पड़ेगा,
जो मालो ख़जाना वो ढो ले गये हैं,
उसे फिर से वापस दिलाना पड़ेगा,
हुये हैं शहीदे वतन जितने अब तक,
उन्हें फिर से जग में बुलाना पड़ेगा।

(३)

भारत जननि तेरी जय तेरी जय हो।
हो वीर अरु धीर सन्तान माँ तेरी,

(६)

तेरी विजय-सूर्य माता उदय हो।
हों भीष्म-से धीर अर्जुन-सरिस वीर,
अकबर शिवाजी का फिर से उदय हो।
गान्धी का सङ्कल्प पूरा करे ईश,
बिघ्न और बाधा सभी का प्रलय हो।
आवें पुनः कृष्ण देखें दशा तेरी,
सरिता-सरों में भी बहता प्रणय हो।
तेरे लिये जेल हो स्वर्ग का द्वार,
बेड़ी की झन्झन् में वीणा की लय हो।
गान्धी रहें वो 'तिलक' याँ पै फिर आयें,
'अरबिंद' 'लाला' 'जितेन्द्र' का उदय हो।
शर्मा भनत आज हिन्दू-मुसलमान,
बोलो सभी मिल जननि तेरी जय हो।

(४)

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा।
प्रजा के आगे तुम्हें भी साहब! सर अपना अब तो झुकाना होगा॥
१ नशीली चीजें शराब, गाँजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटा के इनकी खरीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा॥
२ हमारे सिक्के की दर को साहब! घटा बढ़ा करके लूटते हो।
अब एक शिलिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा॥
३ लगान आधा करो जमीं का, किसान जिससे जरा सुखी हों।
महकमा इसका हमारी कौंसिल के ताबे तुमको रखाना होगा॥

४ फिजूल-ख़र्ची, बिला ज़रूरत, जो फौज पर हो रही हमारी ।
अधिक नहीं गर तो आधा उसको, ज़रूर साहब घटाना होगा ॥
५ बड़े-बड़े भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफसर ।
उसे मुआफिक लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा ॥
६ स्वदेशी कपड़े करे तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावें ।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगाना होगा ॥
७ समुद्र तट का जहाजी वाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के ।
उसे हमारे महाजनों के अधीन रखकर चलाना होगा ॥
८ जिन्हें क़तल, या क़तल-इरादा, सज़ा मिली हो उन्हें न छोड़ें ।
बकाया क़ैदी पुलीटिकल सब, तुरन्त साहब ! छुड़ाना होगा ॥
९ उठा लिये जायँ राजनैतिक जो मामले चल रहे मुलक पर ।
जो इकसौ चौबिसदफा अलिफ है, उसेतोबिलकुल मिटाना होगा ॥
१० अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन तथा दफा ऐसी सब उठाकर ।
हमारे भाई जो निर्वसित हैं, उन्हें वतन में बुलाना होगा ॥
११ मुहकमा खुफिया-पुलिस उठादो या करदो उसकोप्रजाकेताबे ।
हमें भी बंदूक और पिस्तौल बराय हिफाजत दिलाना होगा ॥

(५)

थे हम भी कभी जाँबाज़ वतन, ऐ चर्ख़ ! हमें बरबाद न कर ।
ज़िंदा हैं मगर यह ज़ीस्त नहीं, अब और सितम ईजाद न कर ॥
ज़र और जवाहर सारा लुटा, सब शान गई, नादार बने ।
फैशन पै लुटाते मुल्क का ज़र, नाशाद को क्यों तू शाद न कर ॥
जब गान्धीजी ने ज़ोर दिया, जेलों के उधर दरवाज़े खुले ।
हम आहो बुका से काम जो लें, देते हैं डपट फ़रियाद न कर ॥

(८)

गोलमेज़ का तोफ़ा दिया जो हमें, नादान खुशी से उछलने लगे।
क्या जाल बिछाया हिकमत का, बातों में फ़क़त आज़ाद न कर॥
कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा, दिया डंका बजा आज़ादी का।
हे कृष्णमुरारी, कर तू मदद, मज़लूम को अब बेदाद न कर॥

(६)

जिसकी मुद्दत से तमन्ना थी वह दिन आने को है।
फिर बहार आने को है ये गुञ्चा खिल जाने को है॥
काट गये हैं दासता की बेड़ियाँ सी० आर० दास।
लाजपत से "लाज" "पति" भारत की रह जाने को है॥
अब मुरस्सा होगा प्यारा हिन्द मोतीलाल से।
फिर "जवाहर" से खज़ाना अपना भर जाने को है॥
स्वर्ग से आकर करें तेरा तिलक भारत "तिलक"।
कर्मयोगी गान्धी अब वह शुभ समय लाने को है॥
जंग औ खूँ रेज़ियों से हाय भारत लुट गया।
बल अहिंसा से वही अधिकार फिर पाने को है॥

(७)

होने वाला काम जो है वह भी हो ही जायगा।
ज़ुल्म करते करते ज़ालिम खुद बखुद मिट जायगा॥
कौन कहता है कि उनसे मामला हो जायगा।
हाँ ये माना रोज़े महशर फैसला हो जायगा॥

(६)

था किया ऐसा ज़ुल्म अन्याय रावण दुष्ट ने।
राम ने जैसा किया था वैसा ही अब हो जायगा॥
कंस से बदला लिया था कृष्ण ने अन्याय का।
इंडियन यूरोपियन में वैसा ही हो जायगा॥
कृष्णजी के कर की मुरली रामचंदर का धनुष।
गाँधीजी के कर में चर्खा चक्र-सा हो जायगा॥
सत्य से होती विजय थी सब तरह के युद्ध में।
सत्य पर आरूढ़ हो स्वराज ही हो जायगा॥

(८)

उधर बन्दूक़ एयरोप्लेन गुरखे और बम होंगे।
इधर शौक़े शहादत में सरे तसलीम ख़म होंगे॥
यह माना उनकी जानिब से बहुत जौरोसितम होंगे।
हमारा तो अहिंसा धर्म होगा और हम होंगे॥
उधर दावा है छोड़ेंगे न हम हिन्दोस्ताँ हरगिज।
इधर है जोश अब तो हुक्माराने हिन्द हम होंगे॥
लड़ेंगे जंग आज़ादी में यों हिन्दोस्ताँ वाले।
कलेजा होगा अर्जुन का तो, अंगद के क़दम होंगे॥
जवानाने वतन से भर दें सारे जेलखाने वह।
जब अपनी सल्तनत होगी, तभी आज़ाद हम होंगे॥
जिन्हें है देश से उलफ़त उन्हें किस बात का गम है।
खुशी से वह सहेंगे उनपे जो जौरोसितम होंगे॥

(८)

गोलमेज़ का तोफ़ा दिया जो हमें, नादान खुशी से उछलने लगे।
क्या जाल बिछाया हिकमत का, बातों में फ़क़त आज़ाद न कर॥
कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा, दिया डंका बजा आज़ादी का।
हे कृष्णमुरारी, कर तू मदद, मज़लूम को अब बेदाद न कर॥

(६)

जिसकी मुद्दत से तमन्ना थी वह दिन आने को है।
फिर बहार आने को है ये गुञ्चा खिल जाने को है॥
काट गये हैं दासता की बेड़ियाँ सी० आर० दास।
लाजपत से "लाज" "पति" भारत की रह जाने को है॥
अब मुरस्सा होगा प्यारा हिन्द मोतीलाल से।
फिर "जवाहर" से खजाना अपना भर जाने को है॥
स्वर्ग से आकर करें तेरा तिलक भारत "तिलक"।
कर्मयोगी गान्धी अब वह शुभ समय लाने को है॥
जंग औ खूँ रेज़ियों से हाय भारत लुट गया।
बल अहिंसा से वही अधिकार फिर पाने को है॥

(७)

होने वाला काम जो है वह भी हो ही जायगा।
ज़ुल्म करते करते जालिम खुद बखुद मिट जायगा॥
कौन कहता है कि उनसे मामला हो जायगा।
हाँ ये माना रोज़े महशर फैसला हो जायगा॥

था किया ऐसा जुल्म अन्याय रावण दुष्ट ने।
राम ने जैसा किया था वैसा ही अब हो जायगा॥
कंस से बदला लिया था कृष्ण ने अन्याय का।
इंडियन यूरोपियन में वैसा ही हो जायगा॥
कृष्णजी के कर की मुरली रामचंदर का धनुष।
गाँधीजी के कर में चर्खा चक्र-सा हो जायगा॥
सत्य से होती विजय थी सब तरह के युद्ध में।
सत्य पर आरूढ़ हो स्वराज ही हो जायगा॥

(८)

उधर बन्दूक़ एयरोप्लेन गुरखे और बम होंगे।
इधर शौक़े शहादत में सरे तसलीम ख़म होंगे॥
यह माना उनकी जानिब से बहुत जौरोसितम होंगे।
हमारा तो अहिंसा धर्म होगा और हम होंगे॥
उधर दावा है छोड़ेंगे न हम हिन्दोस्ताँ हरगिज।
इधर है जोश अब तो हुक्मराने हिन्द हम होंगे॥
लड़ेंगे जंग आज़ादी में यों हिन्दोस्ताँ वाले।
कलेजा होगा अर्जुन का तो, अंगद के क़दम होंगे॥
जवानाने वतन से भर दें सारे जेलखाने वह।
जब अपनी सल्तनत होगी, तभी आज़ाद हम होंगे॥
जिन्हें है देश से उलफ़त उन्हें किस बात का गम है।
खुशी से वह सहेंगे उनपे जो जौरोसितम होंगे॥

यह कहकर नौजवानाने वतन जेलों में जाते हैं।
यह सारे जेलखाने हिंद के दैरोहरम होंगे॥
हवाए हुब्बे कौमी बह रही है देश में "बेढब"
यक़ीं हैं अब बयाबाने वतन बाग़े अरम होंगे॥

(९)

जो जख्म करने को उनके मक़तल में
बर्छियों की अनी रहेगी।
तो हम निशाने बनेंगे फिर भी
हमारी गरदन तनी रहेगी॥
जो जुल्मबाजों की गन-मशीनें
चलेंगी हम बेकसों के ऊपर।
तो याखुदा मर मिटेंगे हम सब
मगर यह हसरत बनी रहेगी॥
लोकाके भालों पै चाहे लोके
या तोप ही दम न क्यों करा दे।
मगर ये जीते जी हम कहेंगे
ठनी है जो बस ठनी रहेगी॥
वो जुल्म ढालें हजारों मुझपर
पै हम अहिंसा का व्रत करेंगे।
करिश्मा भी उनका देख लेंगे
कि कब तलक दुश्मनी रहेगी॥

मचल के पहलू में दिल है कहता
कि हम हैं "शायक" स्वतंत्रता के।
तुम्हारी तोपों के बामुकाबिल
हमारी ये लेखनी रहेगी॥

(१०)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलामखाना।
आज़ाद होगा होगा, आता है वह ज़माना॥
खूँ खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झण्डे पर जाँ निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है जेल ओ दमन की प्यारो।
इक खेल हो रहा है फाँसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
भारत के वास्ते है मंजूर सर कटाना॥

(११)

यारो, वतन का तुमको जिस दिन ख़याल होगा।
तब दुश्मनों से अपना बाँका न बाल होगा॥
पीटेंगे पेट अपना इंगलैंड के जुलाहे।
कपड़ा बनाने में जब हासिल कमाल होगा॥

जाना विदेश में जब अनाज का रुकेगा।
तब देखना हमारा घर माल माल होगा॥
जिस दिन करोगे दिल से बहिष्कार तुम बिदेशी।
"दे दो स्वराज्य हमको" यह क्यों सवाल होगा॥

(१२)

जो वक्त शिकवा खुदा से महशर
में रोके हम अश्कबार होंगे।
तो सुन के भारत की दुर्दशाओं
को रंज परवरदिगार होंगे॥
करोगे फरियाद कैसे रोकर
खुदा के हमसर बरोजे महशर।
ये चन्द क़तरे भी आँसुओं के
न मिलने वाले उधार होंगे॥
महात्मा जी को कैद रखने से
आन्दोलन न दब सकेगा।
अभी तो तैंतिस करोड़ गान्धी
इस हिन्द में आशकार होंगे॥
हज़ारों मोती के होंगे जौहर
लाखों होंगे जमा जवाहर।
औ मरने वाले वतन पै अपने
करोड़ों क्या बेशुमार होंगे॥

तुम्हारे तीरे सितम को मेहमाँ
बना के दिल में जो रख रहे हैं।
ये मेरी आहों में होके शामिल
तुम्हारे सीने में पार होंगे ॥
गज़ब में आकर न बदलो तेवर
चला के ख़ंजर भी आज़मा लो।
क़सम खुदा की ये सच ही मानो
ज़रा न हम बेक़रार होंगे ॥
जो कत्ल करने की है तमन्ना
तो ये भी दिल में ख्याल रखना।
हमारे खूँ के हरएक क़तरे
स्वराजे उम्मीदवार होंगे ॥
हमारे भारत के बच्चे बच्चे
बढ़ा के उत्साह कह रहे हैं।
कि हिन्द माता के क़दमों में सर
चढ़ा के हम जाँनिसार होंगे ॥
जो छोटे बच्चों के नर्म दिल में
भी गोलियो को चुभा रहे हो।
तुम्हारे सीने में चुभने वाले
हज़ारों बिच्छू के आर होंगे ॥

बने हैं जाँबाज़ हम भी शायक
व बक्ते जिबहः भी देख लेना।
कि जेरे खंजर भी जाँनशीनों
के सर ये बीसों हज़ार होंगे॥

(१३)

अपनी वफाओं का यह नतीजा मिला हमें,
गैरों का जुल्म जोर उठाना पड़ा हमें।
कब तक सतायेंगे यह सितमगर यहाँ हमें,
अब तो करार लेने दे जेरे समा हमें॥
जलियानवाला बाग़ बना है तमाम हिन्द,
आती है गोलियों की बराबर सदा हमें।
ख्वाहिश है मुल्क कौम के आज़ादी की अगर,
लाज़िम है अपने मुल्क पै होना फ़िदा हमें॥
तोप वो मशीनगन हैं उधर हमको खौफ क्या,
हुब्बे वतन का चाहिये काफी असा हमें।
अफ़सोस जेलख़ाने में हों लीडराने मुल्क,
और कुछ न आती हैफ है शर्मोहया हमें॥
स्वराज की अगर है तमन्ना बढ़े चलो,
हर हर कदम पै देती है हिम्मत सदा हमें।
हम जान देने के लिये तय्यार बैठे हैं,
अब इसके आगे कौनसी देंगे सज़ा हमें॥

(१५)

क्यां अहले हिन्द के लिये इन्साफ है यही,
हक़ मांगने पै मिलती है इलाही सज़ा हमें।
आज़ादी अपनी चाहो करो मिलके इत्तिफ़ाक़
देती सबक़ है हिन्द की यारो क़ज़ा हमें॥
परमात्मा से अर्ज है शर्मा की रात-दिन,
आज़ादिये वतन की अता हो बसा हमें।

(१६)

कातब सूत स्वदेशी रूई घरे मँगवायके, चरखा रोज चलाय केना॥ रूई दूकान से मँगवैबे, वोके घरही में धुनवैबे, कतबै पहिले से हम पेउनी ढेर बनायके, चरखा०॥ कपड़ा जौन बिदेसी बाय, ओमे देबै आग लगाय, गोईयाँ पहिनब अँगिया खद्दर कै सियाय के, चरखा०॥ होला सुदेसी कस मज़बूत, मनबै विदेसी से छूत, गोईयाँ धुन के पहिरब चलत फिरत अठिलायके, चरखा०॥ मानब गांधीजी कै बात, कातब उठ चरखा दिन रात, गोईयाँ खेलब कजरी देसी हम गाय के, चरखा०॥

बिलकुल नई चीज़
अद्भुत आविष्कार

श्यामधारा

फायदा न हो तो
दाम वापस।

बेकार तथा नकली साबित करनेवाले को ५००) इनाम

इस दवा की एक शीशी हमेशा पास रखने से आप हर शिकायत से बच सकते हैं। रेल जहाज़ की सफर में, घर में, देहातों में योग्य चिकित्सक का काम देती है। विविध अनुपानों द्वारा २८ मर्ज में काम आती है—जैसे, सिर-दर्द, दाँत-दर्द, बदन का दर्द, आँख का उठना, धुँधलापन, जाला, नाखूनी, रतौंधी, हैज़ा, वमन, दस्त, बिच्छू के डंक पर, खुजली में फायदा पहुँचाती है। विशेष प्रशंसा बेकार है। जैसे, दोहा—"ग्रह भेषज जल पवन पट, पाय सुयोग कुयोग। होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षण लोग।" अतः एक बार परीक्षा प्रार्थनीय है। थोक खरीदार दूकानदारों से विशेष रियायत—मूल्य बड़ी शीशी ।।।) छोटी ।।) नमूना =)।

मिलने का पताः—

पं० विश्वनाथ शर्मा,

वैदिक औषधालय,

राजा-दरवाजा, बनारस सिटी।

नोट—एक रुपये से कम की वी० पी० नहीं भेजी जाती।